

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, यशायाह, सत्र 1, ईसा। 1 © 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट और यशायाह की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या एक, यशायाह अध्याय एक है। खैर, मुझे लगता है कि यह काफी करीब है।

मेरे, मेरे, आप सभी को, कई पूर्व दोस्तों को, मैं नहीं कहूंगा कि पुराने दोस्तों और कई नए लोगों को देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। आपको यहां पाकर बहुत खुशी हो रही है और इस आने वाले वर्ष के दौरान एक साथ बेहतरीन समय बिताने की उम्मीद है। जैसे ही हम प्रार्थना करते हैं, मुझे सूचित किया गया है कि यहाँ शहर में एक विशेष ज़रूरत वाला व्यक्ति है जिसके लिए प्रार्थना की जा रही है, विशेष रूप से सात बजे, इसलिए हम उस स्थिति को याद रखना चाहेंगे।

आइये मिलकर प्रार्थना करें। पिता, हम आपके वचन के लिए धन्यवाद देते हुए फिर से आपके पास आए हैं। धन्यवाद कि आपने अपने आप को, अपने स्वभाव को, अपने प्रयोजनों को, अपने प्रयोजनों को हमारे लिए प्रकट किया है।

धन्यवाद कि आपने अपनी सच्चाई से लोगों को हमें देने के लिए प्रेरित किया है। धन्यवाद कि आपने हमें यह सोचते हुए अंधेरे में टटोलने के लिए नहीं छोड़ा कि हम यहां किस लिए आए हैं, जीवन क्या है, क्या मायने रखता है। धन्यवाद प्रभु, कि आपने हमें वह दिखाया।

हमें क्षमा करें, प्रभु, कि हम इसे इतनी अच्छी तरह से जानते हैं और इसे इतना कम करते हैं। हम पर दया करो। हे प्रभु, हमारी सहायता करें कि हम न केवल वचन के श्रोता बनें बल्कि उस पर अमल भी करें।

हम इस समय उस विशेष स्थिति के लिए प्रार्थना करते हैं। उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो प्रार्थना कर रहे हैं, और प्रार्थना करें कि आपकी शक्ति स्थिति में उजागर हो और वह व्यक्ति वास्तव में आपके उद्धार का अनुभव कर सके। भगवान, हमारी उन सभी विशेष स्थितियों के बारे में आपकी जानकारी के लिए धन्यवाद, जिन्हें हम आज रात यहां लाए हैं।

इतनी बड़ी भीड़ में, अनगिनत चिंताएँ हैं, और हम उन सभी को आपके सामने रखते हैं, यह जानते हुए कि आप उन्हें जानते हैं, और साथ ही यह जानते हुए भी कि आपने हमें अपनी ज़रूरतें बताने के लिए आमंत्रित किया है। तो हम ऐसा करते हैं, प्रभु। हम अपने अध्ययन पर आपके आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करते हैं।

पिछले 18 महीनों के दौरान आपके आशीर्वाद के लिए धन्यवाद, और अब हम आपके लिए अपनी पूर्ण आवश्यकता को स्वीकार करते हुए फिर से आए हैं। हमें आपकी पवित्र आत्मा की आवश्यकता है जो आकर इस पुरानी, पुरानी किताब, जो इतनी समृद्ध और फिर भी इतनी जटिल है, को समझ सके। धन्यवाद, पवित्र आत्मा, कि आप यहाँ हैं, इसकी सच्चाई को हमारे सामने खोलने के लिए हमसे कहीं अधिक उत्सुक हैं जितना हम इसे जानने के लिए उत्सुक हैं।

धन्यवाद। जैसे ही मैं बोलता हूँ मुझे आशीर्वाद दें। उन लोगों को आशीर्वाद दें जो सुनते हैं, और यह भी दें कि एक साथ मिलकर हम आपके जैसे बन सकें क्योंकि हमने इस शाम को एक साथ समय बिताया है।

आपके नाम पर, आमीन। मैं एक क्लिपबोर्ड के बारे में बताने जा रहा हूँ जिसमें आपके नाम, पते और ईमेल पर हस्ताक्षर करने के लिए जगह है। इसका मतलब यह होगा कि हम यहां एफएएस में रुचि रखने वाले लोगों के लिए लक्षित ईमेल कर सकते हैं, इसलिए कृपया सुनिश्चित करें कि आज शाम को जाने से पहले कम से कम आपका नाम और ईमेल पता इस क्लिपबोर्ड पर हो।

फिर एफएएस स्टाफ ने मुझसे गुरुवार की सुबह की संगोष्ठी की याद दिलाने के लिए कहा है। वहाँ कमरे के किनारे एक पोस्टर है। यह साथी, ओसवाल्ड, बोल रहा है।

मैं उसकी अत्यधिक अनुशंसा तो नहीं कर सकता, लेकिन हो सकता है कि आप आकर जानना चाहें कि वह क्या विधर्मी बातें कह सकता है। तो वह गुरुवार की सुबह है, उसके बाद दोपहर का भोजन, और आप उसमें सादर आमंत्रित हैं। मैं इस बात पर जोर देता हूँ कि कार्यक्रम अस्थायी है।

इस पतझड़ में, मेरा कार्यक्रम थोड़ा जटिल है, इसलिए हम इसके बाद अगले तीन सप्ताह तक मिलेंगे। फिर हम 8 अक्टूबर को छुट्टी लेंगे, जब भगवान ने चाहा और डेल्टा ने अनुमति दी, तो करेन और मैं रोमानिया में होंगे। फिर हम तीन सप्ताह के लिए मिलेंगे, 15 अक्टूबर, 22 और 29 अक्टूबर, और फिर तीन सप्ताह के लिए नहीं।

5 तारीख को, हमारे यहाँ फ़ॉल रिन्यूअल सम्मेलन है, और आप शायद उसमें भाग लेना चाहेंगे। और फिर 12 और 19 तारीख को मैं दूर रहूँगा। फिर उसके बाद, चार सप्ताह, नवंबर का आखिरी सप्ताह, दिसंबर के पहले तीन सप्ताह, फिर जनवरी में एक ब्रेक, और फिर हम इसे 20 जनवरी को शुरू करेंगे, क्षमा करें, दिसंबर का अंत और जनवरी का शुरुआती भाग। .

हम इसे जनवरी में उठाएंगे, और फिर उम्मीद है कि 4 मार्च को छोड़कर, हम हर सोमवार रात को वहाँ पहुंच सकेंगे। तो कृपया इसे अपनी बाइबल में रखें। यह FAS वेबसाइट पर भी होगा, और यदि परिवर्तन करने की आवश्यकता होगी, तो हम आपको बताएंगे।

ठीक है, हम यशायाह की पुस्तक के बारे में बात कर रहे हैं, और योजना मूल रूप से अब से जून तक प्रति सत्र लगभग दो अध्याय है, और यही हमें इस पुस्तक के माध्यम से ले जाएगी। यशायाह को अक्सर भविष्यवक्ताओं का राजकुमार कहा जाता है। इसका एक कारण यह है कि कुछ सुझाव हैं कि वह शाही परिवार का सदस्य रहा होगा।

उसकी राजाओं तक इतनी आसान पहुंच है कि कुछ सुझाव दिए गए हैं कि वहाँ कोई संबंध हो सकता है। लेकिन इससे भी अधिक, यशायाह भविष्यवक्ताओं का राजकुमार है क्योंकि यह पुस्तक बाइबिल में किसी भी अन्य पुस्तक की तुलना में बाइबिल धर्मशास्त्र का अधिक संपूर्ण संग्रह है। मैंने अक्सर छात्रों से कहा है, अगर कोई आपसे कहे, मैं आपकी बाइबिल की 65 किताबें छीनने जा रहा हूँ, तो आप क्या चाहते हैं कि मैं उसे छोड़ दूँ? मैं कहता हूँ, उन्हें बताओ, यशायाह।

क्योंकि यशायाह में किसी भी अन्य पुराने नियम की पुस्तक की तुलना में अधिक नया नियम है, और जाहिर तौर पर किसी भी नए नियम की पुस्तक की तुलना में अधिक पुराना नियम है। लेकिन यह महान पुस्तक कई मायनों में कई अलग-अलग विषयों पर पुराने नियम की शिक्षाओं का सार प्रस्तुत करती है। क्षमा करें, कई अलग-अलग विषयों पर बाइबिल की शिक्षा।

और इसलिए इस समय में हम सब मिलकर यहां मौजूद धन की सतह को ही कुरेद सकेंगे। वास्तव में इस पुस्तक का कोई अंत नहीं है। और आपके साथ इसका अध्ययन करने में सक्षम होना मेरे लिए रोमांचक है क्योंकि मैं जानता हूँ कि आपको ऐसी अंतर्दृष्टि मिलने वाली है जो आपके लिए रोमांचक होगी।

आपके पास एक संक्षिप्त रूपरेखा है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, यह आपके लिए एक प्रकार का रोड मैप मात्र है। जैसे ही हम आज रात अध्याय 1 के अध्ययन में उतरेंगे, मैं इसके बारे में थोड़ा और कहूंगा। लेकिन आप देखेंगे कि दासत्व शब्द बार-बार दिखाई दे रहा है।

मेरा मानना है कि अध्याय 1 से 5 तक, प्रस्तावना, दासता की समस्या हमारे सामने प्रकट होती है। जैसा कि मैंने कहा, हम थोड़ी देर में इसके बारे में और बात करेंगे। फिर अध्याय 6 में, हम दासत्व के आह्वान को देखते हैं।

और वास्तव में, मेरा मानना है कि यह उस समस्या का समाधान है जो अध्याय 1 से 5 में बताई गई है। इज़राइल को दुनिया के लिए भगवान का सेवक कहा जाता है जैसे यशायाह को इज़राइल के लिए भगवान का सेवक कहा जाता था। और इसलिए आप इस बुनियादी मुद्दे से शुरुआत करते हैं कि क्या ईश्वर पर भरोसा किया जा सकता है। आप कभी भी किसी ऐसे व्यक्ति की सेवा नहीं करेंगे जिस पर आपको भरोसा नहीं है। हमने इस बारे में वैसे ही बात की जैसे हमने उत्पत्ति के बारे में बात की थी।

जीवन का मूल मुद्दा यह है कि क्या मैं भगवान पर भरोसा करूंगा? क्या मैं उस पर अपना भार डालूंगा? क्या वह मेरे विश्वास के योग्य है? क्या वह मेरे विश्वास को धोखा देगा? क्या मैं उस पर भरोसा कर सकता हूँ? अगर मैं उस पर भरोसा कर सकता हूँ, तो मैं अपने शाही वस्त्र उतार सकता हूँ और नौकर का तौलिया पहन सकता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं उसके हाथों में सुरक्षित हूँ। तो, अध्याय 7 से 39 भगवान की विश्वसनीयता के प्रश्न से निपट रहे हैं। यहां ईश्वर का रहस्योद्घाटन है जैसा कि यशायाह ने अध्याय 6 में अनुभव किया था। फिर अध्याय 40 से 53 में, सवाल यह है कि क्या आप जानते हैं कि आप उस पर भरोसा कर सकते हैं, यह एक बात है।

लेकिन क्या चीज़ आपको उस पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करेगी? और यशायाह ने खुलासा किया कि यह अनुग्रह है। ईश्वर की कृपा हमें उस पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करेगी। लेकिन फिर सवाल उठता है कि पापी मनुष्य कभी भी पवित्र परमेश्वर के सेवक कैसे हो सकते हैं? और उत्तर फिर से अनुग्रह है।

सेवक वह साधन होगा, दयालु साधन जिसके द्वारा हम उसके सेवक बन सकते हैं। और अंततः, फिर अध्याय 56 से 66 में, क्या अनुग्रह का अर्थ यह है कि धार्मिकता कोई मायने नहीं रखती?

और इसका जवाब जोरदार है, ऐसा निश्चित तौर पर नहीं है। बल्कि, अनुग्रह वह साधन है जिसके द्वारा सेवक के जीवन में ईश्वर की धार्मिकता प्रकट हो सकती है।

तो यह उस तरीके का एक बहुत ही त्वरित अवलोकन है जिसमें मैं पुस्तक को एक साथ पकड़े हुए देखता हूँ। और आप इसे फिर से अपनी बाइबल में एक रोड मैप के रूप में रख सकते हैं, अब हम कहाँ हैं? और उम्मीद है, इससे आपको कुछ मदद मिलेगी। कई बार लोग मुझसे कहते हैं, मैं पुराने नियम को नहीं समझता।

और मैं कहता हूँ मैं समझता हूँ। क्योंकि परमेश्वर ने बाइबल में कुछ अजीब करना चुना। मैंने आपको पहले ही बताया है, दुनिया की अन्य पवित्र पुस्तकें ईश्वर या ईश्वर के प्रवक्ता के कथनों से बनी हैं।

वहाँ सिर्फ कोरे बयान हैं। यदि आप कुरान पढ़ते हैं, तो यह वही है। यदि आप बौद्ध लेखन पढ़ते हैं, तो यह वही है।

यदि आप हिंदू लेखन पढ़ते हैं, तो वह यही है। बस ये कोरी घोषणाएँ। भगवान ने कुछ अलग करना चुना।

ईश्वर ने समय और स्थान के संदर्भ में अपना सत्य प्रकट करना चुना। उन्होंने खुद को एक खास लोगों के साथ रिश्ते में प्रकट करने का फैसला किया। वह कोई दुर्घटना नहीं है।

वह कोई दुर्घटना नहीं है। ईश्वर कोरी घोषणाएँ करने वाला नहीं है। ईश्वर अपने प्राणियों से संबंधित है।

और इसलिए, इसका मतलब है कि हमें इन लोगों के बारे में कुछ समझने की ज़रूरत है। उनके स्थान के बारे में कुछ. उनके समय के बारे में कुछ.

अगर हमें समझना है कि क्या हो रहा है। यदि आप सड़क पर चलते हैं और कोई पत्र उठाते हैं, तो आप नहीं जानते कि इसे किसने लिखा है। आप नहीं जानते कि यह किसके लिए लिखा गया था।

सम्भावना है कि इसका बहुत कम अर्थ निकलेगा। लेकिन वास्तव में, जैसे ही आप पढ़ना शुरू करते हैं, आपको पता चलता है कि पत्र आपके दादाजी ने आपकी दादी को लिखा था। प्रथम विश्व युद्ध में जब वह यूरोप में थे।

यह बहुत अधिक अर्थपूर्ण होगा. और यह विशेष रूप से पुराने नियम के साथ सच है। यह न्यू के साथ भी सच है।

लेकिन हम नए नियम से खुद को धोखा दे सकते हैं कि आपको वास्तव में उस चीज़ को जानने की ज़रूरत नहीं है और आप अभी भी इसे समझ सकते हैं। अच्छा, हाँ आप कर सकते हैं।

लेकिन आप इसे बहुत बेहतर ढंग से समझ सकते हैं यदि आप जानते हैं कि यह किसके लिए लिखा गया है।

कौन लिख रहा था? क्या स्थिति थी? वे कहाँ लिख रहे थे? इत्यादि।

लेकिन पुराने नियम में, आप इससे बच नहीं सकते। तुम्हें पता चल गया है। तो, इस किताब के बारे में क्या? यह लगभग निश्चित रूप से 739 ईसा पूर्व और 701 ईसा पूर्व के बीच लिखा गया था।

मैंने यहां जगह नहीं लिखी है। यहदा में। सोलोमन के पुराने साम्राज्य का दक्षिणी भाग।

739 से 701. अब स्थिति क्या है? और यह यहां इस पृष्ठभूमि शीट पर शामिल है। यह किताब बहुत ही अजीब है।

क्योंकि इसका उत्तरार्द्ध भाग. अध्याय 40 से 66 यशायाह के जीवनकाल के सुदूर भविष्य के लोगों को संबोधित हैं। अब, अन्य भविष्यवक्ता भविष्य में लोगों और स्थितियों के बारे में बात करते हैं।

यह एकमात्र ऐसा स्थान है जहां पैगंबर भविष्य में लोगों से बात करते हैं। और इसके कारण बहुत से विद्वान यह कहने लगे हैं, तो फिर, जाहिर है, यशायाह ने उन अध्यायों को नहीं लिखा। आप 150 साल भविष्य के लोगों से बात नहीं कर सकते।

ठीक है, जब तक आप भगवान के लिए बात नहीं कर रहे हों। इससे फर्क पड़ सकता है। मुझे लगता है ऐसा होता है।

किताब कहती है कि यह यशायाह द्वारा लिखा गया था। और यह मेरे लिए काफी अच्छा है। लेकिन, सबसे पहले, अध्याय 1 से 39 यशायाह के जीवनकाल में ही लोगों के लिए लिखे गए थे।

अब, कृपया एक पल के लिए अपने मानचित्र को देखें। यशायाह के जीवनकाल में क्या हो रहा है? असीरिया का साम्राज्य. इसे यहाँ सही केंद्र पर देखें? यह वह जगह है जहां आज कुर्द रहते हैं।

कुर्द अश्शूरियों के वंशज होने पर गर्व करते हैं। और हर कोई उनसे सहमत है. असीरियन एक विश्व साम्राज्य का निर्माण कर रहे थे।

उन्होंने पहले ही दक्षिण-पूर्व में बेबीलोन पर विजय प्राप्त कर ली थी। उन्होंने पहले ही उत्तर तक, आज के आर्मेनिया और पूर्वी तुर्की पर कब्जा कर लिया था। उन्होंने भूमध्य सागर तक सीधे पश्चिम की भूमि पर पहले ही कब्जा कर लिया था।

और अब, इस समय अवधि, 739 से 701 के दौरान, वे साम्राज्य की अपनी अंतिम चरम शताब्दी की शुरुआत कर रहे हैं। और वे अपने अंतिम लक्ष्य, जो कि मिस्र है, की ओर बढ़ रहे हैं। यदि वे बेबीलोन, मिस्र और उनके बीच संबंध को नियंत्रित कर सकें, तो विश्व व्यापार पर उनका दबदबा हो जाएगा।

युद्ध सदैव व्यापार को लेकर रहा है। और तब भी ऐसा ही था। लेकिन उनकी एक समस्या थी।

इस समय, उनके साम्राज्य और मिस्र के बीच, यह संकीर्ण कनानी पट्टी खड़ी थी। भूमि की यह पट्टी, पश्चिम में भूमध्य सागर और पूर्व में अरब रेगिस्तान के बीच, केवल लगभग 100 मील चौड़ी है। और दुनिया का सारा व्यापार यहीं से होकर गुजरता था।

इस तरह से सुलैमान इतना अमीर बन सका, अगर मैं कह सकूँ, तो वह बेहद अमीर था। पोर्ट ह्यूरन और मियामी के बीच 1-75 पर उनका एकमात्र टोल बूथ था। इसलिए, यदि अशशूरियों को मिस्र जाना है, तो उन्हें इन आठ छोटे देशों में से कई देशों पर चलना होगा।

उन्हें सीरिया को जीतना है, जिसकी राजधानी दमिश्क है। और यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आप इसे अपने दिमाग में स्पष्ट रखें। असीरिया महान विश्व साम्राज्य है।

सीरिया यहां का एक छोटा सा देश है, जिसकी राजधानी दमिश्क है। दो अलग चीजें। दो बिल्कुल अलग चीजें।

इसलिए, उन्हें सीरिया पर विजय प्राप्त करनी होगी। उन्हें इज़राइल को जीतना है। उन्हें फ़िलिस्तिन पर विजय प्राप्त करनी है।

ग्रेट हाईवे यहीं से चलता है। और यह एक अच्छा विचार होगा यदि वे उसी समय यहूदा को बाहर निकाल दें। अन्यथा, वे उन पर निशाना साधने की स्थिति में अपनी पहाड़ी पर बैठे हैं।

रास्ते में, कुछ अन्य देश भी हैं। वहाँ टायर और सिडोन है। भूमध्य सागर पर नौवहन को नियंत्रित करने वाले धनवान, धनी फोनीशियन।

वहाँ अम्मोन, मोआब और एदोम हैं। तो ये रास्ते में हैं। और असीरियन आ रहे हैं।

722 में इज़राइल का पतन हो गया। 710 से 700 तक पलिशती नगरों का पतन हो गया। 701 में, अशशूरियों ने यहूदा को बाहर निकालने की कोशिश की।

यरूशलेम को छोड़कर सभी नगरों पर विजय प्राप्त की। परन्तु उन्होंने यरूशलेम पर विजय प्राप्त नहीं की। हम उस बारे में बात करेंगे।

अगले 25 वर्षों में अम्मोन, मोआब और एदोम का भी पतन हो गया। तो, यह वह स्थिति है जिससे यशायाह निपट रहा है। यह भयानक, भयानक शाही दबाव उत्तर से आ रहा है।

और वह सब उसके साथ शामिल है। अब, जब हम अध्याय 39 के अंत में आते हैं, तो यरूशलेम को छुटकारा मिल गया है। हिजकिय्याह का वध नहीं किया गया है जैसा कि असीरियन आमतौर पर विद्रोही राजाओं के साथ करते थे।

परन्तु यशायाह ने उससे कहा कि वह दिन आ रहा है जब परमेश्वर यरूशलेम को नहीं बचाएगा। वास्तव में, वह यरूशलेम को बेबीलोन के वश में करने जा रहा है। ज़रा ठहरिये।

असीरिया विश्व साम्राज्य है। इस चीज़ में बेबीलोन कहाँ से आता है? खैर, असीरिया अपने विकास में एक गुब्बारे की तरह था। यह एक सैन्य तानाशाही थी।

यदि तानाशाह शक्तिशाली होता तो साम्राज्य का विस्तार होता। यदि तानाशाह कमजोर होता, तो साम्राज्य सिकुड़ जाता। लेकिन लगभग 300 वर्षों में, अंततः मजबूत तानाशाहों का उत्तराधिकार हुआ।

और इस प्रकार गुब्बारा सिकुड़ेगा और फैलेगा। और अंततः, यह अपने विस्तार के सबसे बड़े बिंदु पर पहुंच गया, लगभग 650, जब उन्होंने अंततः मिस्र पर विजय प्राप्त की। और 45 वर्षों के भीतर, असीरिया का अस्तित्व समाप्त हो गया।

गुब्बारा फैलता गया और फैलता गया और फैलता गया और... पॉप! और यह चला गया था। इसे बेबीलोनियों के गठबंधन ने जीत लिया था। और यह इस मानचित्र पर नहीं है, लेकिन आप इसे असीरिया के ऊपर कावा के दाईं ओर लिख सकते हैं।

मेड्स। वे उस पर्वत श्रृंखला में रहते थे जो टाइग्रिस नदी के किनारे उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व तक फैली हुई है। डरावने योद्धा।

और बेबीलोनियों और मादियों ने एक साथ मिलकर 605 में अशूरियों को हरा दिया। जैसा कि आप वहां शीट पर देख सकते हैं, यहूदा के राजा यहोयाकीम ने बेबीलोन का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। लेकिन फिर, कुछ ही समय बाद, उन्होंने विद्रोह कर दिया।

और नबूकदनेस्सर ने आकर 598 में शहर पर कब्ज़ा कर लिया और यहोयाकीम के भाई सिदकिय्याह को सिंहासन पर बिठाया। ठीक है, सिदकिय्याह, यदि कोई राजनीतिज्ञ था तो वह एक राजनीतिज्ञ था। उन्होंने मतदान द्वारा शासन किया।

उस दिन की जो भी लोकप्रिय चीज़ थी, वह उसी के लिए था। और अंततः, उस समय की लोकप्रिय चीज़ बेबीलोन के विरुद्ध विद्रोह थी, और उसने ऐसा किया। और 586 में यरूशलेम को नष्ट कर दिया गया।

नेतृत्व को या तो मार दिया गया या बंदी बना लिया गया। और एक सैन्य गवर्नर को सिंहासन पर बिठाया गया। निराशा।

पूर्ण निराशा. भगवान हार गये. सब खत्म हो चुका है।

और यशायाह प्रेरणा से लिखते हुए कहते हैं, नहीं, नहीं, नहीं, यह सच नहीं है। तुम्हें सज़ा मिल चुकी है, ये तो तय है. लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि भगवान हार गये हैं.

मैंने कहा कि तुम कैद में जाने वाले हो। आपने इसका खंडन किया। तुम कैद में हो, है ना? मैं अब कहता हूँ कि मैं तुम्हें बन्धुवाई से छुड़ाऊंगा।

असीरियन लगभग 900 से ही बंदी बनाने का अभ्यास कर रहे थे। इस प्रकार 400 वर्षों से लोगों को बंदी बनाया जा रहा है। कोई भी कभी भी उस घर नहीं गया जिसके बारे में हम जानते हैं।

इसलिए जब भविष्यवक्ता कहते हैं कि तुम्हें घर जाना है, तो लोग कहते हैं कि तुम पागल हो। नंबर एक, हम कैद में नहीं जायेंगे। और नंबर दो, अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम फिर कभी घर नहीं आएंगे।

और भविष्यद्वक्ता कहते हैं कि तुम बन्धुवाई में जाओगे, और घर लौट आओगे। अंदाज़ा लगाओ? भविष्यवक्ता सही थे। 539 में, मेड्स जहाज़ से कूदे और फारसियों के साथ शामिल हो गए।

आपके मानचित्र पर, वह वहीं होगा जहां, आप इसे वहां देखते हैं, फारस, आधुनिक ईरान। और फारसियों ने मेड्स की सहायता से बेबीलोन को नष्ट कर दिया। और उन्होंने कहा कि जो भी बंदी लोग घर जाना चाहते हैं वे जा सकते हैं।

हम केवल एक को जानते हैं, यहूदियों को। और मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि वे तैयार थे। उनमें से कुछ ने कहा, तुम्हें पता है क्या? वे भविष्यवक्ता सही थे जब उन्होंने कहा कि हम बन्धुवाई में जायेंगे।

शायद जब वे कहते हैं कि हम घर जाएंगे तो वे सही होंगे। हम बेबीलोनियों के साथ घुलने-मिलने वाले नहीं हैं। उन्होंने अपनी पहचान बरकरार रखी।

और निश्चित रूप से, वे घर चले गए। तो यह 40 से 55 है। अब, 56 से 66 की समय सीमा पर कम सहमति है।

लेकिन अधिकांश विद्वान सोचते हैं कि यशायाह लोगों के लौटने के बाद की स्थिति को संबोधित कर रहे हैं। वे 539 में बड़े उत्साह के साथ वापस लौटे। वाह, हम मंदिर का पुनर्निर्माण करने जा रहे हैं।

और जब उन्होंने मंदिर का पुनर्निर्माण करना शुरू किया, तो उन्हें एहसास हुआ कि जो वे बना रहे थे वह सुलैमान के मंदिर से बेहतर नहीं होगा जो जला दिया गया था। यह और भी बुरा होने वाला था। और वे तुरन्त निराश हो गये।

और यशायाह उन से बातें कर रहा है, जब वह कहता है, यदि तुम चाहोगे, यदि तुम परमेश्वर के लिये धर्म से जीना चुनोगे, तो तुम्हारी ज्योति चमक उठेगी। आप वही बन जायेंगे जो आप बनना चाहते थे। एक लालटेन जिसमें से ईश्वर की लौ दुनिया पर चमक सकती है।

और अध्याय 56 से 66 इसी बारे में है। तो, ऐसा प्रतीत होता है कि यशायाह भविष्य में दो स्थितियों को संबोधित कर रहा है। एक, लगभग 550 लोग निर्वासन में हैं और निराश हैं।

और दूसरा, शायद 500 के आसपास, जब लोग लौट आए हैं और निराश हो गए हैं। और फिर, पूरी किताब में, वह हमें एक बहुत ही व्यापक तस्वीर देता है कि भगवान कौन है और वह दुनिया में क्या करना चाहता है। आप वहां की संरचना पर टिप्पणियाँ पढ़ सकते हैं, जहां मैं भविष्य में लोगों से क्यों बात करूं इस पर थोड़ा और विस्तार से चर्चा करता हूं।

ठीक है, यह किताब का बहुत जल्दबाजी वाला अवलोकन है। लेकिन आपको यह समझाने के लिए कि हम कहाँ जा रहे हैं और क्या हो रहा है, अध्याय एक पर नज़र डालने से पहले क्या आपके पास कोई प्रश्न हैं? यिर्मयाह ठीक उसी समय है जब बाबुल यहूदा पर विजय प्राप्त कर रहा था और अंततः उसका पतन हो गया। तो, यिर्मयाह लगभग 630 से 580 है।

तो, उसके पास इन लोगों को यह बताने का बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण कार्य है, कि यरूशलेम गिरने वाला है। और वे कह रहे हैं, तुम पागल हो, यरूशलेम गिर नहीं सकता। अगर कोई उसका घर जला दे तो भगवान को कहाँ नींद आएगी? यिर्मयाह का कहना है कि यही समस्या है।

आप नहीं समझते, भगवान को सोने के लिए घर की आवश्यकता नहीं है। तो, और वह कह रहा है, बहुत अलोकप्रिय रूप से, देखो, बेबीलोन भगवान का उपकरण है। समर्पण।

1980 में यह कैसे घट जाता यदि किसी उपदेशक ने कहा होता, रूस ईश्वर का उपकरण है। बस समर्पण करो. संभवतः उसका अंत यिर्मयाह की तरह एक हौज में हुआ होगा।

और अंत में, यिर्मयाह सही साबित हुआ। हाँ, एक और सवाल. हाँ।

बहुत ज़्यादा, हाँ। ऐसा कहा जाता था कि तीन यशायाह थे। जिसने 700 के दशक में अध्याय 1 से 39 तक लिखा।

जिसने 500 के दशक में 40 से 55 लिखा। और जिसने 400 के दशक में 56 से 66 लिखा। आज उस पर कोई विश्वास नहीं करता.

यह अभी भी तर्क दिया जाएगा कि शायद एक व्यक्ति ने 40 से 55 तक लिखा है। वह निर्वासन का महान गुमनाम भविष्यवक्ता है। बहुत दिलचस्प।

सबसे महान इस्राएली भविष्यवक्ता और हमें कोई अंदाज़ा नहीं कि कौन, क्या, या कहाँ। लेकिन इससे परे, सिद्धांत अब एकाधिक लेखकत्व का है। यरूशलेम के यशायाह ने शायद चार या पाँच अध्याय लिखे होंगे, जो आमोस से छोटी किताब है।

लेकिन किसी न किसी तरह, उन्होंने एक ऐसी प्रक्रिया शुरू की जो 400 वर्षों तक चली जिसमें लोगों ने लिखा और फिर से लिखा और जोड़ा और इसी तरह आगे भी। और आखिरकार, लगभग 350 के आस-पास, किताब खत्म हो गई। अब यह 40 साल पहले की तुलना में सुधार है जब अक्सर कहा जाता था कि पुस्तक 150 ईसा पूर्व तक समाप्त नहीं हुई थी।

लेकिन मेरी स्थिति यह है कि आखिरी बार आपने 400 वर्षों तक समिति की बैठक में लिखी गई एक महान साहित्यिक कृति कब देखी थी? आप जानते हैं कि ऊँट क्या होता है। यह एक समिति द्वारा डिज़ाइन किया गया घोड़ा है। अब मैं अकेला हूँ।

आप यहां एक डायनासोर को देख रहे हैं। इंजीलवादियों को इस चीज़ पर ज़ोर देते हुए देखना दिलचस्प है। मैं कह सकता हूँ, यह परेशान करने वाला है।

लेकिन यह वहीं है जहां यह है। अधिक से अधिक लोग इस बात पर विश्वास करने में असमर्थ हैं कि ईश्वर यशायाह को 150 वर्षों के भविष्य में लोगों के लिए एक संदेश दे सकता था। अब जाहिर तौर पर यह दिमाग चकरा देने वाला है।

मुझे लगता है कि इसका मतलब दिमाग चकरा देने वाला है। लेकिन ऐसा ही है। हाँ? क्या इस बात पर विश्वास करना कठिन है कि पुराने नियम के पूरे हो जाने के बाद यीशु आएंगे? नहीं, मुझे नहीं लगता कि ऐसा है।

त्रासदी यह है कि अधिकांश लोग जो एकाधिक लेखकत्व स्वीकार करेंगे, वे विश्वास नहीं करेंगे कि यीशु की भविष्यवाणी की गई थी। इस तथ्य के बाद लोगों को सामान मिला। क्योंकि भविष्यवाणी असंभव है।

भविष्य कोई नहीं बता सकता। जहां ऐसा प्रतीत होता है कि भविष्यवाणी है, वास्तव में यह पहले ही हो चुका है और डेटा को फिर से लिखा जाता है ताकि यह प्रतीत हो कि किसी को यह पहले से पता था। यह संपूर्ण आधुनिक पुराने नियम की सोच में अंतर्निहित एक बुनियादी मुद्दा है।

भविष्यवाणी असंभव है। यह बस एक प्रकार का अवलोकन है, लेकिन यशायाह को जिस दिशा में वह यहां ले जा रहा है, उसे देखने पर मुझे ऐसा लगता है कि यशायाह एक ऐसी पुस्तक है जिसे हम उसकी भविष्यवाणियों के सच होने के कारण प्रगति पर काम कह सकते हैं। और फिर हम अंतिम पुनर्स्थापना को देख रहे हैं और हम पुस्तक के बाद वाले भाग पर पहुँचते हैं।

तो, यह अभी भी हो रहा है। हाँ, मुझे लगता है कि मैं यह नहीं कहूंगा कि कार्य प्रक्रिया में है, लेकिन मैं यह कहूंगा कि यह ऐसा कार्य है जो प्रक्रिया में प्रकट हो रहा है। इस क्रम में इसका अर्थ उजागर हो रहा है।

मैं वहां जरूर जाऊंगा। ठीक है, आइए अध्याय 1 को देखें। मुझे खेद है कि हम इसे इस शीट पर दिए गए विवरण की तरह नहीं देख पाएंगे, लेकिन मैं आगे बढ़ना चाहता था और इसे भविष्य के संदर्भ के लिए करना चाहता था। अधिकांश विद्वानों का मानना है कि अध्याय 1 से 5 तक को एक प्रस्तावना के रूप में समझा जाना है।

संभवतः कम से कम अध्याय 1 से 6 तक कालानुक्रमिक क्रम में नहीं हैं। कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, आप जानते हैं, वेस्ली ने बचाए जाने से पहले उपदेश दिया था। शायद यशायाह ने बुलाए जाने से पहले एक भविष्यवाणी लिखी थी।

मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है, वास्तव में, ये पांच अध्याय उनके मंत्रालय के विभिन्न बिंदुओं से लिए गए हैं और उन्हें उद्देश्यपूर्ण ढंग से यहां एकत्र किया गया है। और जब हम यहां आगे बढ़ेंगे तो हम उस उद्देश्य के बारे में बात करेंगे।

अब, स्पष्ट रूप से आपके पास इस समय अध्याय 1 से 5 पढ़ने का समय नहीं है क्योंकि मैं आपको वहां निर्देशित कर रहा हूँ। तो आइए मैं आपके लिए इन अध्यायों की एक अजीब विशेषता बताता हूँ। फिलहाल हम अध्याय 1 को एक तरफ छोड़ देंगे।

लेकिन आपकी बाइबिल वहां है। अध्याय 2 श्लोक 1 से 5 तक देखें। क्या आप कहेंगे कि यह सकारात्मक है या नकारात्मक? यह सकारात्मक है, हाँ, बहुत सकारात्मक है। सभी राष्ट्र परमेश्वर की तोरा सीखने के लिए यरूशलेम आने वाले हैं।

लेकिन फिर अध्याय 2 श्लोक 6 आता है। हम इस पर अगले सप्ताह विचार करेंगे। इसलिए, मैं यहां बहुत अधिक समय नहीं बिताना चाहता। लेकिन मैं आपको बस इतना बताऊंगा कि यह बहुत नकारात्मक है।

2 श्लोक 6 से 4 श्लोक 1. और हम इसे दूसरे ढंग से भी कह सकते हैं। यहाँ आशा है. और यहाँ निर्णय है.

अब अध्याय 4 श्लोक 2 से 6 तक देखें। नकारात्मक या सकारात्मक? सकारात्मक, हाँ, फिर से। देश साफ़ होने वाला है. वे शुद्ध और पवित्र होने जा रहे हैं.

उन पर एक छत्रछाया रहने वाली है. एक तरह से निर्गमन की याद ताजा करती है। और फिर मैं आपको बताऊंगा अध्याय 5 श्लोक 1 से 30 तक एक बार फिर बहुत नकारात्मक है।

फैसला आने वाला है. तो, हमारे पास यह दिलचस्प विकल्प है। इसे इंटरचेंज कहा जा सकता है.

आगे और पीछे, आगे और पीछे, आगे और पीछे। एक ओर, वे न्याय के अधीन हैं। परमेश्वर उन्हें नष्ट करने जा रहा है।

वे भगवान के अंगूर के बगीचे हैं और वे जो कुछ भी पैदा करते हैं वह कड़वे अंगूर हैं और भगवान इसे तोड़ने जा रहे हैं। और फिर भी, इज़राइल शुद्ध और पवित्र होने जा रहा है। वह स्थान जहाँ सभी राष्ट्र परमेश्वर के उद्देश्यों को सीखने के लिए आने वाले हैं।

और हम कहते हैं, हुह? कैसे? यह इजराइल वह इजराइल कैसे बन सकता है ? और अध्याय 6 इसी बारे में है। तो, एक अर्थ में, परिचय 1 से 5 और 6 है। और फिर अगला खंड 6 और 7 से 12 है। यशायाह की पुस्तक की विशेषताओं में से एक इस प्रकार के बदलाव हैं जहां यह पता लगाना मुश्किल है कि यह खंड क्या है पिछले वाले का अंत या अगले वाले का आरंभ? और जवाब है हाँ।

यह दोनों है और. और यहाँ भी ऐसा ही प्रतीत होता है। तो इन शुरुआती अध्यायों में यही चल रहा है।

अब, जैसा कहा गया है, मैं चाहता हूँ कि हम अध्याय 1 को देखें। पद 1 में प्रयुक्त भाषा पर ध्यान दें। यशायाह के बारे में क्या? दृष्टि। कौन सा वह क्या? देखा। वह आपको क्या संदेश देता है? चित्रों।

जो सन्देश उसने सुना वह क्यों नहीं? हम इस शब्द को अध्याय 2, श्लोक 1 में देखेंगे, लेकिन हमने इसे अभी भी देखा होगा। तो जो सन्देश उसने सुना वह क्यों नहीं? आप क्या सोचते हैं? ठीक है, यह एक तस्वीर है। चित्र और संदेश में क्या अंतर है? यह हजारों शब्दों के बराबर है।

एक चित्र अधिक आकर्षक, अधिक समावेशी होता है। आप पीछे खड़े होकर कह सकते हैं, अरे हाँ, यह संदेश है। यह कुछ ऐसा है जो संज्ञानात्मक है।

यह कुछ ऐसा है जो तर्कसंगत है। यह कुछ ऐसा है जो बौद्धिक है। कोई दर्शन नहीं।

एक दृष्टि शामिल है। और यह भविष्यवक्ताओं की विशेषता है। भविष्यवक्ता केवल मुखपत्र नहीं हैं।

वे केवल एक दिव्य शब्द को सुनकर उसे फिर से उगल नहीं रहे हैं। यह बुतपरस्त भविष्यवाणी के बारे में सच हो सकता है, लेकिन यह इस्राएल की भविष्यवाणी के बारे में सच नहीं है। यहां जो कुछ भी हो रहा है, उसमें वे पूरी लगन से शामिल हैं।

उसने जो दृश्य देखा। सुनो, हे स्वर्ग, और कान लगाओ, हे पृथ्वी, क्योंकि प्रभु ने कहा है। अब वह आकाश और पृथ्वी को सुनने के लिये क्यों बुलाता है? वे गवाह हैं।

यह एक अदालती मामला है। स्वर्ग और पृथ्वी जूरी हैं। अब स्वर्ग और पृथ्वी एक अच्छी जूरी क्यों होंगे? वे भगवान की रचना हैं।

श्लोक 2 का अगला भाग देखें। बच्चों को मैंने पाला-पोसा है, लेकिन उनके पास क्या है? मेरे खिलाफ बगावत की। अब मैं आपसे फिर से पूछता हूँ, इस अदालती मामले में स्वर्ग और पृथ्वी एक अच्छी जूरी क्यों होंगे? क्योंकि वे आज्ञाकारी हैं। वे विद्रोह नहीं करते।

स्वर्ग और पृथ्वी तटस्थ हैं। वे वही करते हैं जो परमेश्वर कहते हैं। वे उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।

सूरज नहीं कहता, मुझे लगता है मैं आज दक्षिण दिशा में आऊंगा। नहीं होता। अब पद 3 पर जाएँ। लोग मुझसे बाइबल में मेरा पसंदीदा पद पूछते हैं, और मैं कहता हूँ, ठीक है, जो भी मैंने आखिरी बार पढ़ा हो।

लेकिन यह मुझे बहुत पसंद है। बैल अपने मालिक को जानता है। गधा अपने मालिक का पालना है।

लेकिन इजराइल को पता नहीं. मेरे लोग नहीं समझते. और मैं उसे जीवित ओसवाल्ट संस्करण में रखूंगा।

इजराइल एक गधे से भी अधिक मूर्ख है। यहाँ फिर से प्रकृति है. बैल और गधे वास्तव में समय-समय पर विद्रोही होते हैं।

लेकिन वे इतने चतुर हैं कि जानते हैं कि मैनेजर कहां है। इजराइल इतना स्मार्ट नहीं है. बहुत खूब।

पुस्तक की अंतिम पंक्ति को देखें। अध्याय 66, पद 24. वे बाहर निकलेंगे और उन मनुष्यों के शवों को देखेंगे जिनके पास... क्या है? विद्रोह कर दिया।

वही शब्द. अध्याय 1 का श्लोक 2, 24 का 66। अब, अवज्ञा और विद्रोह के बीच क्या अंतर है? जिद्दी निश्चय.

जिद्दी निश्चय. अवज्ञा आकस्मिक हो सकती है. विद्रोह नहीं हो सकता.

हाँ? अवज्ञा को अभी भी पहचाना जा सकता है। हाँ। हिब्रू में तीन शब्द हैं जो ईश्वर के समक्ष हमारी विफलता से संबंधित हैं।

एक शब्द का अनुवाद पाप के रूप में किया जाता है। हम इस बारे में पहले भी बात कर चुके हैं। लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा है, दोहराव शिक्षा की आत्मा है।

यदि आपको यह समझ में नहीं आया, तो दोहराव शिक्षा की आत्मा है। पाप. यह सबसे तटस्थ है.

इसका मतलब है लक्ष्य चूक जाना. आप इसे अनजाने में कर सकते हैं या आप इसे जानबूझकर कर सकते हैं। यह सबसे सामान्य है.

दूसरा शब्द दुर्भाग्य से एक पुराने अंग्रेजी शब्द के साथ अनुवादित है। दिलचस्प बात यह है कि हमारे पास आधुनिक अंग्रेजी में कोई अच्छा समकक्ष नहीं है। यह विकृति को दर्शाता है।

वह आंतरिक विकृति जिसके कारण हम लक्ष्य से चूक जाते हैं। और तीसरा शब्द वह है जिसके साथ हम यहां निपट रहे हैं। विद्रोह या अतिक्रमण.

किसी भी सीमा से इनकार करना. तो, यशायाह शुरू में ही कह रहा है, मैं स्वर्ग और पृथ्वी को बुलाने जा रहा हूँ। मैं गधे और बैल का उपयोग करने जा रहा हूँ।

और मैं यह कहने जा रहा हूँ कि मेरे लोगों ने इस बात से इनकार किया है कि मुझे उन पर कोई सीमा लगाने का कोई अधिकार है। ओह, अमेरिका, अमेरिका. तो, अध्याय एक पर वापस जाएँ।

श्लोक चार में विद्रोह के कुछ और प्रभावों का वर्णन किया गया है। लोग, एक पापी राष्ट्र. पहला शब्द है.

अधर्म से भरा हुआ. दूसरा शब्द है. दुष्टों की सन्तान.

यह दूसरा शब्द है. जो बच्चे भ्रष्ट व्यवहार करते हैं। उन्होंने प्रभु को त्याग दिया है।

उन्होंने इस्राएल के पवित्र का तिरस्कार किया है। वे पूरी तरह से अलग-थलग हैं. क्या आपको लगता है कि भगवान कोई बात बनाने की कोशिश कर रहे हैं? यह काफी गंभीर है.

श्लोक पाँच से आठ तक, परिणाम व्यक्त करने का एक आलंकारिक तरीका है। श्लोक पाँच और छह में नंबर एक, आपके पास किसी ऐसे व्यक्ति की तस्वीर है जिसे पीटा गया है। चोट लगी है, घायल है, खून बह रहा है, पट्टी नहीं बंधी है।

और भगवान कह रहे हैं, तुम ऐसा क्यों चाहोगे? फिर से, जैसा कि मैंने अपने अध्ययनों में विभिन्न तरीकों से कहा है, यह कोई मनमाना ईश्वरीय कथन नहीं है, यदि तुम ऐसा करते हो, तो मैं तुम्हें पीट-पीटकर टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। इसका मतलब यह है कि यदि आप ईश्वर के तरीकों की अवज्ञा में रहते हैं, तो दुखद परिणाम होंगे। आप एक ऊंची इमारत से कूदते हैं, आप फुटपाथ से टकराएंगे।

भगवान कहते हैं, तुम क्यों पीटना चाहोगे? और फिर श्लोक आठ में, फिर से, एक सुंदर चित्र। और इस पुस्तक की एक विशेषता यह है कि यह अपनी बात समझाने के लिए भाषण के इन सभी सुंदर अलंकारों से भरी हुई है। सियोन की बेटी दाख की बारी में झोंपड़ी, वा ककड़ी के खेत में झोंपड़ी, और घिरे हुए नगर के समान रह गई है।

मैंने यहां पृष्ठभूमि में उल्लेख किया है, इज़राइली गांव अच्छे खेत के बीच में नहीं बनाए गए थे, जैसा कि हम अपने घरों और खलिहानों के साथ करते हैं। गाँव खेत के किनारे पर बने हैं। और हर कोई एक साथ रहता है, कुछ हद तक सुरक्षा के लिए, कुछ हद तक समुदाय के लिए।

और फिर आप अपने क्षेत्र की ओर चल पड़ते हैं। लेकिन फसल के समय में, आप यात्रा के लिए समय नहीं निकाल सकते। तो, आप अपने खेत में एक झोंपड़ी बनाते हैं और पूरा परिवार वहां जाकर डेरा डालता है।

एक तरह से कैंप मीटिंग की तरह. और फसल समाप्त होने तक वे उस झोंपड़ी में रहेंगे। और फिर सर्दी आ जाती है और झोंपड़ी गिरने लगती है।

भगवान कहते हैं कि तुम ऐसे ही हो। आप सर्दियों में खीरे के खेत के बीच में पड़ी एक झोंपड़ी की तरह हैं, जो टूटकर बिखर रही है। आपको ऐसा क्यों करना होगा? आप उसे क्यों चुनेंगे? श्लोक नौ में, हमारे पास ईश्वर के लिए दो बहुत ही महत्वपूर्ण शब्दों में से दूसरा है जो इस अध्याय में दिखाई देता है और जो पूरी किताब में दिखाई देगा।

सेनाओं के प्रभु. अब, यदि आपके पास एक नया अंतर्राष्ट्रीय संस्करण है, तो यह सर्वशक्तिमान भगवान कहता है। यह कोई खराब अनुवाद नहीं है.

लेकिन फिर, यह इस अद्भुत रूपक को याद करता है। हम किस मेजबान के बारे में बात कर रहे हैं? हम स्वर्ग की सेनाओं के बारे में बात कर रहे हैं। वह स्वर्ग की सेनाओं का प्रभु है।

न्यू लिविंग ट्रांसलेशन ने इसे सही पाया। वह वही है जिसके आदेश पर स्वर्ग की सारी सेनाएँ हैं। यीशु बगीचे में इसी बारे में बात कर रहे थे।

पीटर, अपनी तलवार दूर रखो। क्या समझ नहीं आता? अगर मैं इससे बाहर निकलना चाहता तो लाखों स्वर्गदूतों को बुला सकता था। मैं इसी लिए आया हूँ।

वैसे, यही एक कारण है कि मुझे द पैशन फिल्म बहुत अच्छी नहीं लगती। यीशु को किसी असहाय, निष्क्रिय चीज़ की तरह नहीं घसीटा गया था। वह जानबूझकर गया था।

मैं इसी समय के लिए आया हूँ, पीटर। इसे दूर रख। उसने पतरस से क्या कहा? उसने बस इतना कहा, मैं यही हूँ।

स्वर्ग की सारी सेनाएँ मेरे नियंत्रण में हैं। अब, यह वाक्यांश भविष्यवक्ताओं का पसंदीदा है। भविष्यवक्ता यह कहना पसंद करते हैं, आप सभी अशूर की सेनाओं से प्रभावित हैं, क्या आप नहीं हैं? हम उसे जानते हैं जिसके पास स्वर्ग की सारी सेनाएँ हैं।

आप उनसे इतना क्यों डरेंगे? वह नंबर एक है, सेनाओं का प्रभु, सर्वशक्तिमान प्रभु, स्वर्ग की सेनाओं का प्रभु। श्लोक चार में नंबर दो पहले ही आ चुका है। उन्होंने इस्राएल के पवित्र का तिरस्कार किया है।

यह शीर्षक बाइबल में 31 बार आता है। उनमें से एक याकूब का पवित्र है, जो यशायाह में है। 31 बार।

अनुमान लगाएं कि उनमें से कितने यशायाह में पाए जाते हैं? 26. और उनमें से एक किंग्स में है, जो यशायाह मार्ग का डुप्लिकेट है। तो, वास्तव में केवल चार अन्य स्थान हैं, दो यिर्मयाह में, और दो भजन संहिता में।

बाकी सब इस्राएल के पवित्र यशायाह में हैं। मुझे विश्वास करना होगा कि इसका कारण यशायाह का अनुभव है। इस्राएल का परमेश्वर यही पवित्र, पवित्र, पवित्र है।

और वह यशायाह का पसंदीदा शब्द बन गया। अब याद रखें, हम कभी-कभी ढेर सारी चीज़ों में पवित्र निवेश करते हैं। इसका मतलब यह है कि बिल्कुल दूसरा, जिसके जैसा कोई दूसरा नहीं है।

और इसका मतलब है कि केवल एक ही पवित्र चरित्र है। हम इस बारे में पहले भी बात कर चुके हैं। जब तक आप यहां हैं, मैं इसे फिर से कहूंगा।

बुतपरस्त दुनिया में, पवित्र का कोई नैतिक अर्थ नहीं था। ऐसा नहीं हो सका क्योंकि अच्छे देवता और बुरे देवता हैं। शुद्ध देवता और अशुद्ध देवता हैं।

और वे सभी, उद्धरण, पवित्र हैं। इब्रानियों का कहना है, मुझे छुटी दे दो। वे चीजें पवित्र नहीं हैं।

आपने दया के लिए इसे एक लट्टे से बनाया है। आपने लट्टे को ढकने और इसे अच्छा दिखाने के लिए अपने सोने के सिक्कों को पिघला दिया। क्या आप उसे अन्य कहने जा रहे हैं? नहीं।

हम एक ऐसे व्यक्ति से मिले हैं जो दूसरा है। वह हवा नहीं है, वह चाँद नहीं है, वह तारे नहीं है, वह अन्य है। और इसका मतलब है कि केवल एक ही पवित्र चरित्र है, उसका।

और अच्छी खबर यह है कि उसका चरित्र प्रेम, न्याय, धार्मिकता, सच्चाई, अच्छाई है। यह अच्छी खबर है। क्या यह भयानक नहीं होगा यदि ब्रह्मांड में एक पवित्र प्राणी राक्षस होता? पवित्र का मतलब होगा क्रूर.

पवित्र का मतलब गंदा होगा। होली का अंग्रेजी भाषा में क्या मतलब होता है? दिलचस्प बात यह है कि वेबस्टर आध्यात्मिक उत्कृष्टता कहते हैं।

बुरा नहीं है। होली का अंग्रेजी भाषा में जो अर्थ है वही मतलब है क्योंकि यही पवित्र का चरित्र है। और यशायाह कहता है, कि तू ने उसका तिरस्कार किया है।

अब, हिब्रू में घृणा में वह भावनात्मक भार नहीं है जो अंग्रेजी में है। इसका सीधा सा मतलब है बेकार समझना। ब्रह्मांड के एक उत्कृष्ट स्वामी को आप अपने समय के लायक नहीं मानते हैं।

तो, इस्राएल का पवित्र, सेनाओं का स्वामी, या सर्वशक्तिमान स्वामी, या स्वर्ग की सेनाओं का स्वामी, ये दो उपाधियाँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। ठीक है, जल्दी से, आगे बढ़ो। वह एक से नौ है.

अब, श्लोक नौ के अंत में, यशायाह बस इसे एक ट्रॉवेल से बिछा देता है। यदि सेनाओं के स्वामी ने हमारे लिये कुछ बचे हुए लोगों को न छोड़ा होता, तो हम सदोम और अमोरा के समान होते। वू हू! ओह, हम भगवान के लोग हैं.

हम सदोम और अमोरा के उन दुष्ट लोगों की तरह नहीं हैं। तब यशायाह कहता है, तुझे बल्ला चाहिए? अब, श्लोक 10 को देखें। यह बेहतर हो जाता है।

हे सदोम के शासकों, प्रभु का वचन सुनो। हे अमोरा के लोगो, हमारे परमेश्वर की शिक्षा पर कान लगाओ। उस परिवर्तन का एक उदाहरण है जिसके बारे में मैं बात कर रहा था।

श्लोक नौ पहले श्लोक का अंत है। श्लोक 10 दूसरे श्लोक की शुरुआत है। और हम दोनों को एक साथ बांध रहे हैं।

अब, 35 वर्षों से, मैंने सेमिनारियों को रविवार की सुबह पूजा करने के आह्वान के रूप में छंद 11 और 12 और 13 का उपयोग करने की चुनौती दी है। मुझे नहीं लगता कि उन्होंने कभी ऐसा किया है। प्रभु कहते हैं, तुम्हारे इतने सारे बलिदानों से मुझे क्या लाभ? मेरे पास मेढ़ों के होमबलि और अच्छे पले-बढ़े जानवरों की चर्बी बहुत है।

मैं बैलों, या मेमनों, या बकरों के लोहू से प्रसन्न नहीं होता। जब तुम मेरे सामने उपस्थित होने आए, तो तुमसे यह, मेरे न्यायालयों को रौंदने की अपेक्षा किसने की? क्या यह बढ़िया नहीं है? शुभ प्रभात। तुम्हें यहाँ आने के लिए किसने कहा था? मेरे पास फिर व्यर्थ भेंट, धूप, और घृणित वस्तु न लाओ।

नया चाँद और सब्त का दिन और दीक्षांत समारोह का बुलावा। और यहीं अंतिम पंक्ति है। मैं वैसे भी अधर्म और गंभीरता को सहन नहीं कर सकता।

हाँ। अब मैं यहाँ पूछता हूँ, भगवान एक अनुष्ठान से इतने परेशान क्यों हैं जबकि उन्होंने लैव्यव्यवस्था में इसकी आज्ञा दी थी? और उत्तर यह है कि अनुष्ठान का उद्देश्य हमारे हृदय की स्थिति का प्रतीक होना है। हमारे हृदय की स्थिति का वास्तविक संकेतक यह है कि हम एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, विशेषकर उन लोगों के साथ जो हमें बदला नहीं दे सकते।

परमेश्वर कहते हैं, मैं अधर्म, कुटिलता, और बड़ी सभा से बैर रखता हूँ। मैं तेरे नये चंद्रमाओं, तेरे नियत पर्वों से बैर रखता हूँ। वे मेरे लिए बोझ बन जाते हैं।

मैं उन्हें सहन करते-करते थक गया हूँ। जब तुम अपने हाथ फैलाओगे, मैं अपनी आँखें तुमसे छिपा लूँगा। वाह!

मुझे लगता है कि यहाँ जो चल रहा है वह यह है कि श्लोक एक से नौ तक में एक समस्या का विवरण दिया गया है। तो, समाधान क्या है? ओह, इसका समाधान अधिक धार्मिकता है। और भगवान कहते हैं, नहीं।

क्या निदान है? अपने आप को धोकर शुद्ध करो। अपने बुरे कामों को मेरी आँखों के साम्हने से दूर करो। बुराई करना बंद करो।

अच्छा करना सीखो. न्याय मांगो. सही जुल्म.

अनाथों को न्याय दिलाओ। विधवा के मामले की वकालत करें. हाँ।

अब फिर से, भविष्यवक्ताओं में बार-बार, आप अनुष्ठान पर हमला होते देखेंगे। ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि वे अनुष्ठान में विश्वास नहीं करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अधर्म और गंभीर सभा में विश्वास नहीं करते हैं।

यदि अनुष्ठान, यदि धार्मिक व्यवहार वास्तव में हमारे सच्चे हृदय की स्थिति का प्रतीक है जैसा कि हमारे व्यवहार में प्रदर्शित होता है, तो भगवान हमारे धार्मिक व्यवहार को अपनी नासिका में एक

मधुर गंध पाते हैं। लेकिन मुद्दा यह है कि क्या यह मेरे जीवन का प्रतीक है? छह दिनों तक शैतान की तरह जियो और सातवें दिन चर्च जाओ और तुम्हें पृष्ठभूमि में भगवान की उल्टी की धीमी आवाज सुनाई देगी। आपने भगवान को हमारी रविवार की सुबह की सभाओं में यह कहते हुए सुना है, काश आप घर चले जाते।

मेरी इच्छा है कि आप इस स्थान पर दरवाजे बंद कर दें। मैं इससे परेशान हूँ। तो, श्लोक 18, आओ अब हम मिलकर तर्क करें, प्रभु कहते हैं।

यद्यपि तुम्हारे पाप लाल रंग के हैं, वे बर्फ के समान श्वेत होंगे। यद्यपि वे लाल रंग के समान लाल हैं, तौभी वे ऊन के समान हो जाएंगे। यदि तुम इच्छुक और आज्ञाकारी हो, तो तुम भूमि का अच्छा-अच्छा खाओगे।

यदि तुम इन्कार करो और विद्रोह करो, तो तुम तलवार से मारे जाओगे। क्योंकि यहोवा ने अपने मुख से यह कहा है। फिर, हमारा समय यहाँ उड़ रहा है।

इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपनी आज्ञाकारिता से स्वयं को शुद्ध बनाते हैं। आपको इतना सावधान रहना होगा कि आप किसी भी श्लोक को पूरी बाइबिल के आलोक में पढ़ें। बाद में अध्याय 64 में, लोग यशायाह के मुख से कहने जा रहे हैं, हमारी धार्मिकता गंदे चिथड़ों के समान है।

नहीं, हमारी धार्मिकता हमें शुद्ध नहीं बनाती। परन्तु हमारी धार्मिकता यह दिखाएगी कि हमने परमेश्वर की निःशुल्क क्षमाशील कृपा को स्वीकार कर लिया है। यही मुद्दा है।

ठीक है। श्लोक 21 और निम्नलिखित। इन छंदों में विरोधाभास देखें।

न्याय से परिपूर्ण वफ़ादार नगर वेश्या बन गया है। उसमें धार्मिकता समा गई, जो अब हत्यारे हैं। चाँदी, मैल।

सर्वोत्तम शराब, मिश्रित पानी. राजकुमार, विद्रोही. तुम्हें यही होना चाहिए था और तुम यही हो।

इसलिए, श्लोक 24 में, प्रभु सेनाओं के प्रभु, इस्राएल के शक्तिशाली, की घोषणा करते हैं। यहाँ तीसरा शीर्षक है. इस्राएल का पवित्र, स्वर्ग की सेनाओं का प्रभु, इस्राएल का शक्तिशाली।

मुझे शत्रुओं से मुक्ति मिलेगी. निश्चित रूप से बाइबिल की सबसे डरावनी आयतों में से एक। यहाँ दुश्मन कौन हैं? भगवान के लोग.

मैं तुम्हारे विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊंगा. मैं तेरे मैल को मैल के समान गंधित कर दूंगा। मैं तुम्हारी सारी मिश्रधातु निकाल दूँगा।

वहीं रुक जाओ। आह ठीक है। अब हम परमेश्वर के शत्रु हैं और परमेश्वर बस हमें नष्ट करना चाहता है और हमें पृथ्वी से हटा देना चाहता है।

गलत। अगला श्लोक पढ़ें। बाइबल अध्ययन में यह सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

अगला श्लोक पढ़ें। और मैं तेरे न्यायियों को पहिले के समान, और तेरे सलाहकारोंको पहिले के समान नियुक्त करूंगा। इसके बाद तू धर्म का नगर, विश्वासयोग्य नगर कहलाएगा।

इस पुस्तक के प्रमुख विषयों में से एक यह है कि निर्णय ईश्वर का इच्छित अंतिम शब्द नहीं है। बल्कि, न्याय शुद्धि और मुक्ति की ओर ले जाना है। अब लोगों के लिए इस पर विश्वास करना बहुत ही कठिन था, हमारे लिए भी इस पर विश्वास करना उतना ही कठिन है।

उन्होंने सोचा कि चुनाव मुक्ति और न्याय के बीच था। और वे एक भविष्यवक्ता को यह कहते हुए सुनना चाहते थे, अरे, हमारा न्याय नहीं किया जाएगा। हम वितरित होने जा रहे हैं।

लेकिन इस समूह के लिए, मुक्ति की एकमात्र आशा न्याय के माध्यम से थी। यदि इस समूह को यूँ ही माफ कर दिया जाता, तो सड़ांध जारी रहती और हमें उनके बारे में पता नहीं होता या आज यह किताब हमारे पास नहीं होती। इसलिए, यह निर्णय या मुक्ति का प्रश्न नहीं है।

यह निरंतर सड़न या निर्णय के माध्यम से बहाली का प्रश्न है। लेकिन मैं इसे फिर से कहता हूँ, निर्णय कभी भी भगवान का अंतिम शब्द नहीं होता है। यह उनका आखिरी शब्द हो सकता है, लेकिन यह हम पर निर्भर है।

न्याय द्वारा सिंथोन को छुड़ाया जाएगा। उसमें वे लोग हैं जो धार्मिकता से पश्चाताप करते हैं। परन्तु विद्रोही और पापी एक साथ टूट जायेंगे।

क्या आप यहाँ आगे-पीछे देखते हैं? पाखंडी धर्म, सच्चा धर्म. वफ़ादार शहर रंडी बन गयी. तू विश्वासयोग्य नगर कहलाएगा।

अध्याय एक कई मायनों में लघु रूप में संपूर्ण अध्याय एक से पाँच तक है। लेकिन अब देखिए कि अध्याय कैसे समाप्त होता है और इसके साथ ही हमारा काम पूरा हो गया है। लेकिन विद्रोही और पापी.

जब आप बाइबल अध्ययन कर रहे हों, तो कनेक्टर्स की तलाश करें। लेकिन विरोधाभास का संकेत है. ये नहीं वो.

इसलिए, या के लिए, या चूँकि कारण और प्रभाव का संकेत हैं। इस कारण, इसलिये वैसा होगा। तो, ये संयोजक शब्द यह देखने में बहुत महत्वपूर्ण हैं कि क्या हो रहा है।

तो यहाँ हमारे पास एक विरोधाभास है, लेकिन विद्रोही और पापी। फिर बागी हैं, मिलकर टूटेंगे। जो लोग प्रभु को त्याग देंगे वे भस्म हो जायेंगे।

वे उन बांज वृक्षों के कारण लज्जित होंगे जिन्हें तू चाहता है। वे आपके द्वारा चुने गए बगीचों के लिए शरमाएंगे। तू उस बांजवृक्ष के समान होगा जिसकी पत्तियाँ सूख जाती हैं, और उस बगीचे के समान होगा जिसका जल बिन पानी होता है।

ताकतवर कोमल हो जाएगा . उनका काम एक चिंगारी है. वे दोनों एक साथ जल जायेंगे और उन्हें बुझाने वाला कोई नहीं होगा।

पुस्तक में बार-बार चलने वाले विषयों में से एक पेड़ है। निकट पूर्व में बुतपरस्त पेड़ों की पूजा करते थे क्योंकि वे इतने आम नहीं थे। तो आपको एक अच्छा मजबूत पेड़ मिलेगा।

खैर, जाहिर तौर पर उस चीज़ में कुछ दैवीय शक्ति है। यह आपको स्थिरता दे सकता है. यह तुम्हें जीवन दे सकता है.

तो आप पेड़ों की पूजा करते हैं. और यशायाह कहता है, जो बांज आप चाहते हैं, जो बगीचे आपने चुने हैं, पुस्तक में पेड़ों का दोनों तरीकों से उपयोग किया गया है। एक ओर, जब वे मानवीय गौरव और शक्ति का प्रतीक हैं, तो उन सभी को काट दिया जाएगा।

दूसरी ओर, जब वे उस जीवन का प्रतीक हैं जो भगवान उन लोगों को दे सकता है जो काटे गए और टूट गए हैं, तो भगवान आपको एक पेड़ की तरह बना देंगे। तो, इसका उपयोग दोनों तरीकों से किया जाता है। और जैसे-जैसे हम किताब पढ़ते जाएंगे, मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करूंगा, पेड़ों के उपयोग पर।

राजमार्ग एक और छवि है जो पुस्तक में चलती है जिसका उपयोग मुख्य रूप से सकारात्मक तरीकों से किया जाता है। लेकिन पेड़ और राजमार्ग दो हैं, और चार या पाँच अन्य हैं जो पूरी किताब में बार-बार सामने आते हैं। दिलचस्प बात यह है कि जो लोग एकाधिक लेखकत्व में विश्वास करते हैं, वे कहते हैं, क्या यह दिलचस्प नहीं है? उन्होंने उस्तादों का इतनी अच्छी तरह से अध्ययन किया है कि वे उनकी छवियों को भी पुनः प्रस्तुत करते हैं।

ठीक है। अब, यह अंतिम पैराग्राफ, फिर से, यशायाह की एक विशेषता है। जब उसके पास एक महान सकारात्मक वादा है जैसा कि आप छंद 26 और 27 में देखते हैं, तो वह आपको यह कहने नहीं देगा, ओह, जी, मुझे लगता है कि कोई समस्या नहीं है, है ना? वह तुम्हें वर्तमान में वापस ले आएगा।

हाँ, भगवान के पास भविष्य के लिए अच्छी ख़बर है। हां, भगवान के पास अद्भुत वादे हैं, लेकिन तब तक नहीं जब तक आप पश्चाताप न करें। अच्छी ख़बर है, लेकिन तब तक नहीं जब तक आप पश्चाताप न करें।

बार-बार, आप पाएंगे कि पुस्तक में ऐसा घटित हो रहा है। वह हमें इन अद्भुत वादों के पीछे छिपने नहीं देगा। ओह, अंत में सब कुछ ठीक हो जाएगा, इसलिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं कैसे रहता हूँ।

यशायाह कहता है, ओह, हाँ, ऐसा होता है। चलिए प्रार्थना करते हैं। पिताजी, इस महान पुस्तक के लिए धन्यवाद।

इन प्रिय मित्रों और उनकी रुचि के लिए धन्यवाद। मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब हम अध्ययन करेंगे तो आप हमारी मदद करेंगे, हमें कुछ सच्चाई समझने में मदद करेंगे जो हमारे जीवन के लिए है। आपके नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट और यशायाह की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या एक, यशायाह अध्याय एक है।